ध्रुब घोष

अकादेमी पुरस्कार : हिन्दुस्तानी वाद्य संगीत (सारंगी)

श्री ध्रुब घोष का जन्म 25 अक्तूबर 1957 को बम्बई में हुआ था। श्री घोष ने अपने रचनात्मक वर्षों में संगीत में भिन्न–भिन्न अनावरण किए हैं। आपके पिता सुप्रसिद्ध संगीतकार निखिल घोष ने आपको वाद्ययंत्र संगीत, तबला और सारंगी में प्रशिक्षित किया था। बाद में, श्री ध्रुब घोष ने सागीरूद्दीन खान से सारंगी और दिनकर कैकिनी तथा अली अकबर खान से संगीत सिद्धांत की शिक्षा ग्रहण की थी। सारंगी को अपने संगीत माध्यम के रूप में चुनते हुए, इसकी उन्नति के लिए खुद को समर्पित कर दिया था।

श्री ध्रुब घोष के नेतृत्व में सारंगी की दुनिया को 1989 में भारत भवन, भोपाल में उत्कृष्ट सारंगी मेला में इकट्ठा हुए सारंगी बिरादरी द्वारा स्वीकार किया गया। श्री घोष ने कम होते विद्यार्थियों को आकर्षित करने के लिए सारंगी–वादन में नए प्रयोगों और एकल प्रस्तुति के रूप में सारंगी वादन में बदलाव पर कार्य किया है। वह उसी समय में प्रस्तुतियों में अग्रणी वाद्ययंत्र–वादकों के साथ रहे हैं।

श्री घोष संगीत के एक समर्पित अध्यापक भी हैं। आपने संगीत महाभारती, मुम्बई में प्रधानाचार्य (1995–97) के रूप में सेवा प्रदान की है, और रोट्टरडम यूनिवर्सिटी ऑफ म्यूजिक, हॉलैंड (2006–08) की संकाय में रहे हैं। वह भारतीय विद्या भवन के संगीत नर्तन शिक्षापीठ, मुम्बई (2008) के प्रधानाचार्य के रूप में कार्य किया है, जहां वह सारंगी और गायन संगीत सिखाना जारी रखे हुए हैं। आपने एम्सटडर्म कंजरवेटरी ऑफ म्यूजिक (2010–2013), रोटडर्म कंजरवेटरी, और यूरोप तथा संयुक्त राज्य (अमेरिका) के कई विश्वविद्यालयों में सेमिनारों तथा कार्यशालाओं में भाग ले चुके हैं। भारत और विदेश की प्रमुख कम्पनियों ने उनकी रिकॉर्डिंग्स प्रसारित की हैं।

श्री ध्रुब घोष ने सुर सिंगार संसद, मुम्बई (1985) द्वारा प्रदत्त सुरमणि खिताब, मध्य प्रदेश सरकार के संस्कृति विभाग द्वारा प्रदत्त उस्ताद अब्दुल लतीफ़ खान मेमोरियल पुरस्कार (2009), और पॉल विंटर कन्सर्ट के साथ सी.डी. एम. आई.एच.ओ.: *जरनी टू द माऊंटेन* के लिए ग्रैमी पुरस्कार सहित कई सम्मान प्राप्त किए हैं।

श्री ध्रुब घोष को हिन्दुस्तानी वाद्ययंत्र संगीत में योगदान के लिए संगीत नाटक अकादेमी पुरस्कार से सम्मानित किया जाता है।